दिया गया। कुछ लोग 1453 की इस घटना को इतना महत्वपूर्ण मानते हैं कि पुनर्जागरण का प्रारंभ इसी समय से मानने लगे।

2.3.4 अरब संपर्क

मध्यकाल में अरबों के संपर्क से यूरोपीयों ने कागज बनाने की कला सीख ली। फिर जर्मनी के जॉन गुटेनबर्ग ने 15वीं शताब्दी के मध्यकाल में टाईप मशीन का अविष्कार किया। प्रारंभिक मुद्रण यंत्र के विकास ने बौद्धिक विकास का मार्ग प्रशस्त किया। धीरे–धीरे छापाखाना का प्रसार इंग्लैंड, जर्मनी, स्पेन, फ्रांस आदि देशों में भी हो गया। कागज और मुद्रण यंत्र के अविष्कार ने प्रकाशन तंत्र को विकसित किया। पुस्तक–मुद्रण के आविष्कार के बाद अधिकाधिक लोगों के लिए यह जानना सम्भव हो गया कि दुनिया में क्या हो रहा है। ज्ञान अब मठों और विश्वविद्यालयों के दीवारों के पीछे ही सीमित न रह कर पढ़े–लिखे लोगों के कहीं अधिक व्यापक दायरे में फैलने लगा। अब राजनीतिक और दार्शनिक विचार ज्यादा से ज्यादा लोगों के पास पहुँचने लगा परिणामस्वरूप रुढ़िवादिता और अंधविशवास को ठेस पहुँचा।

2.3.5 कुबलाई खॉ का दरबार

नवीन चेतना के प्रचार एवं प्रसार में मंगोल शासक कुबलाई खॉ के दरबार का भी महत्वपूर्ण योगदान माना जाता है। इनका दरबार विद्वानों, धर्म प्रचारकों, व्यापारियों का केन्द्र बन गया था। मंगोल राज्यसभा पोप के दूतों, भारत के बौद्ध भिक्षुओं, पेरिस, इटली के विद्वानो तथा चीन के दस्तकारों, भारत के गणितज्ञों एवं ज्यातिषचार्यो आदि सभी से सुशोभित था। अतः इस युग में पूर्व एवं पश्चिम का वास्तिवक संपर्क हुआ जिसका यूरोप के लोगों पर काफी प्रभाव पड़ा।

रोजर बेकन प्रयोगात्मक खोज प्रणाली का अगदूत था। प्रयोग के आधार पर ही गैलिलियों ने कॉपरनिकस के सिद्धांत को अकाट्य साबित किया।

2.4.3 मानवतावाद का समर्थन

मानवतावाद का अर्थ है– मानव जीवन में रुचि लेना, मानव की समस्याओं का अध्ययन करना, मानव का आदर करना। 15वीं शताब्दी के मानवतावादी आंदोलन के महत्व में तीन बातें उल्लेखनीय हैं– क. इटली के मानवतावादियों ने मानव के बौद्धिक विकास और सतत् चिंतन मे सहयोग किया। ख. मानवतावादियों द्वारा की गई ग्रीक साहित्य की पुनः स्थापना ने चर्च के लेखों और साहित्य का स्थान ले लिया। ग. आलोचनावाद का शुरूआत हुआ।

2.5 पुनर्जागरण का स्वरूप

इस आंदोलन की प्रकृति तथा महत्ता बदलते दृष्टिकोणों एवं व्याख्या के साथ बदलती रही है। इसे एक सर्वमान्य तथा सर्वग्राही अर्थ देना काफी कठिन है। पुनर्जागरण के लौकिक दृष्टिकोण का सबसे महत्वपूर्ण आधार था मानवतावाद। मानवतावाद ने न सिर्फ मानव का बल्कि एक व्यक्ति के महत्व को भी स्थापित किया। अतः व्याक्तिवाद पुनर्जागरण की सांसारिक भावना का दूसरा महत्वपूर्ण स्वरूप है। सांसारिक पुनर्जागरणकालीन सभ्यता शहरी थी। यह मध्यकालीन देहाती सभ्यता से भिन्न प्राचीन यूनानी और रोमन साम्राज्य से मिलती जुलती थी। पुनर्जागरण आंदोलन का मुख्य स्वरूप मध्यवर्गीय था। यह जनसाधारण का आंदोलन नहीं बल्कि मध्यमवर्गीय धनी लोगों के संरक्षण में चलने वाला आंदोलन था। धनी मध्यवर्ग ने समाज में अपने प्रभुत्व की स्थापना हेतु चर्च, पोप और सांमतों की तरह साहित्य और सत्ता को संरक्षण प्रदान किया। इसके अतिरिक्त पुनर्जागरण का स्वरुप तर्कप्रधान इसाईविरोधी तथा सामंतविरोधी था।

यूरोप के देशों में पुनर्जागरण आंदोलन का स्वरूप थोड़ा भिन्न था। इटली की तुलना में यूरोप के उत्तरी देशों में चित्रकारी, मूर्तिकला और स्थापत्य में कम महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई। इसके विपरीत मानवतावादी दर्शन और साहित्य ने अधिक महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई। बरगंडी के दरबार में कला और पुनर्जागरण संस्कृति का एक महत्त्वपूर्ण केन्द्र विकसित हुआ। फ्रांस में पुनर्जागरण की अपनी एक अलग विशेषता थी। पुनर्जागरण काल के दौरान बागवानी पर ध्यान दिया गया था। संगीत के विकास में भी उत्तरी यूरोप ने एक नया मानक स्थापित किया।

कार्ल मार्क्स और एंगेल्स ने पुनर्जागरण को कला और अर्थव्यवस्था के बीच संबंध के परिप्रेक्ष्य में रखा अर्थात् सांस्कृतिक एवं भौतिक उत्पादन के बीच संबंध के संदर्भ में। इन्होंने आधार संरचना (base sturcture) के रूप में आर्थिक आधार तथा (super structure) सांस्कृतिक अधिसंरचना (super structure) का निर्माण करता है। अल्फ्रेड वॉन मार्टिन ने भी पुनर्जागरण को व्यक्तिवाद और आधुनिकता की उत्पत्ति का श्रेय देते हुए पुनर्जागरण को 'बुर्जुआ क्रांति' कहकर इसके आर्थिक आधार पर बल दिया।

कुछ अन्य विद्वानों जैसे गारिन अंताल, माइकेल बेक्सेंडल, हांस नैरोन आदि के द्वारा पुनर्जागरण की सामाजिक व्याख्या प्रस्तुत की गयी। अंताल ने तर्क दिया कि फ्रलोरेंस जैसे शहर को उद्योग तथा व्यापार के कारण बुर्जुआ वर्ग मिला जो कला को संरक्षण प्रदान करता था। बेक्सेंडल ने चित्रकला को संरक्षक तथा कलाकार के बीच सामाजिक संबंध का द्योतक माना है।

2.6 पुनर्जागरण की अभिव्यक्ति

पुनर्जागरण काल में पुराने से सामंजस्य का नवीन के निर्माण की शुरूआत हुई। इसने न केवल साहित्य, कला, दर्शन एवं विज्ञान को अपितु मानव जीवन के प्रत्येक क्षेत्र को प्रभावित किया।

2.6.1 साहित्य के क्षेत्र में

पुनर्जागरण काल में निज साहित्य की रचना हुई। उसका विशिष्ट महत्व है। इससे पूर्व सहित्य का सृजन केवल लैटिन भाषाओं में होता आ रहा था किंतु पुनर्जागरण काल में इनका अध्ययन अध्ययापन यूरोपीय भाषाओं में किया जाने लगा। विभिन्न देशों के लोग अपनी–अपनी मातृभाषाओं में सहित्य का सृजन करने लगे जिससे इटालियन, फ्रेंच, स्पेनिश, पुर्तगाली, जर्मन, अंग्रेजी, डच, स्वीडीश, आदि भाषाओं का विकास हुआ। पेट्रार्क को इतावली पुनर्जागरण साहित्य का पिता कहा जाता है। पेट्रार्क की कविताओं में नवीनता दृष्टिगोचर होती है। पेट्रार्क ने समूचे यूरोप में मानवतावादी विचारधारा को प्रोत्साहित किया। बोकाचियो गद्य साहित्य के विकास में महत्वपूर्ण योगदान दिया। दॉते को इतावली कविता का पिता कहा जाता है। दॉते की प्रसिद्ध कृति डिवाइन कामेड़ी है जिसमें एक काल्पनिक जगत की यात्रा का वर्णन है। दॉते की अन्य प्रसिद्ध रचना है द मोनालिसा। लेखकों की दिलचस्पी अब जीते–जागते लोगों में, उनकी खुशियों और गमों में थी। उन्होंने अपने समय की तूफानी जिंदगी के बारे में लिखा, अपनी कविताओं लोगों की सशक्त भावनाओं को व्यक्त किया।

पुनर्जागरण काल के साहित्य की दूसरी प्रमुख विशेषता विषय वस्तु की थी। मध्यकालीन साहित्य का मुख्य विषय धर्म था पंरतु इस युग के साहित्य में धार्मिक विषय के स्थान पर मनुष्य के जीवन और इस युग के साहित्यकारों के विचार मध्ययुगीन धर्मसंबधी वाद–विवाद एवं मान्यताओं से मुक्त थे। अब साहित्य आलोचना प्रधान, मानवतावादी और व्यक्तिवादी हो गया स्पेन के लेखक सर्वातेस ने 'डॉन क्विजोट' में सामंतवादी मूल्यों की खिल्ली उड़ाई हैं। लोक साहित्य से उन्होनें मठवासियों और सामंतों की ओर लक्षित व्यंग्य और उपहास को ग्रहण किया।

फ्रॉसीसी साहित्य के क्षेत्र में रेवेलास और मॉन्टेन इसी युग की देन है। रेवेलास ने धार्मिक कट्टरता एवं पुरातनंपथियों के विरोध में आवाज उठायी। उसने अधिकतम संपन्न लोगों, धार्मिक कट्टरता एवं अंधविश्वास पर व्यंगय किये। अंग्रेजी साहित्यकारों में टोमस मूर ने पुनर्जागरण के कार्य को आगे बढ़ाया। इनकी प्रमुख रचना यूटोपिया है। इसमें इग्लैंड के जनजीवन में सामाजिक बुराईयों और आर्थिक दोषों का निरुपण किया। फ्रांसिस बेकन इस युग का सर्वोत्तम निबंधकार थे। इसने तर्क, अनुभव और प्रमाण पर जोर दिया। शेक्सपीयर द्वारा अपनी कृतियों में मानव के सभी संभव भावों और उनकी क्षमताओं तथा दुर्बालताओं का विवेचन किया है। शेक्सपीयर ने मनुष्य के चरित्र को उत्तम दर्शाने के लिए वही कार्य किया जो माइकल एंजेलो ने फ्रांस में किया।